Result Mitra Daily Magazine

भारत में शुतुरमुर्ग के मिले हालिया अवशेष एवं शुतुरमुर्ग की प्रजाति

हालिया सन्दर्भ –

- हाल ही में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की एक टीम ने आंध्र प्रदेश के प्रकाशम में 41 हजार साल पुराना शुतुरमुर्ग (Ostrich) के घोंसले की खोज की है।
- पुरातत्वविदों की टीम के अनुसार इस घोंसले की चौड़ाई लगभग 9-10 फीट है, जिसमें अनुमानतः 9-11 अंडे रहते थे।
- हालांकि यह घोंसला एक बार में लगभग 30 से 40 अंडा रखने में सक्षम हो सकता था।
- पुरातत्वविदों की टीम ने जीवाश्मों के लिए प्रकाशम स्थल की जांच के बाद बताया कि यहां मिला शुतुरमुर्ग का यह घोंसला दुनिया का सबसे पुराना ज्ञात शुतुरमुर्ग का घोंसला है।
- शुतुरमुर्ग की सबसे पुरानी घोंसले की यह खोज भारतीय उपमहाद्वीप में विलुप्त 'मेगाफौना' के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकती है।

क्या है मेगाफौना?

- प्राणी विज्ञान (Zoology) के अनुसार मेगाफौना का तात्पर्य बड़े जानवरों से है।
- मेगाफौना शब्द का उपयोग आमतौर पर 50 Kg से अधिक वजन वाले जानवरों को वर्णित करने के लिए किया जाता है।
- 'मेगाफौना' शब्द का पहली बार उपयोग वर्ष 1876 में ब्रिटिश प्रकृतिवादी और खोजकर्ता अल्फ्रेड रसेल वालेस ने अपनी पुस्तक "द ज्योग्राफिकल डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ एनिमल्स" में किया था।
- मेगाफौना जानवरों को उनके आहार प्रणाली के आधार पर तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है:-

- **मेगाहरबिवोर्स -** ऐसे मेगाफौना जानवर जो सिर्फ पौधों और उनके उत्पाद आहार के रूप में ग्रहण करते थे।
- **मेगाकार्निवोर्स -** ऐसे मेगाफौन जानवर जो मांस (Flesh) आहार के रूप में ग्रहण करते थे।
- **मेगाओम्निवोर्स -** ऐसे मेगाफौना जानवर जो पौधे और मांस दोनों का उपयोग आहार के रूप में करते थे।

Result Mitra

- इस आधार पर शुतुरमुर्ग को 'मेगाओम्निवर्स' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है जिसका वजन लगभग 90 से 140 किलोग्राम के बीच तथा ऊंचाई लगभग 7 से 9 फीट के बीच होती है।

- भारतीय उपमहाद्वीप में शुतुरमुर्ग के जीवाश्म की अन्य खोज -
- वर्तमान में आंध्र प्रदेश के प्रकाशम में हुई शुतुरमुर्ग के घोंसले की खोज 41 हजार वर्ष पहले दक्षिणी भारत में शुतुरमुर्ग की मौजूदगी साबित करती है।
- भारतीय उपमहाद्वीप में शुतुरमुर्ग के जीवाश्म का पहला प्रलेखित साक्ष्य 1884 में रिचर्ड लिडेकर द्वारा वर्तमान पाकिस्तान में ऊपरी शिवालिक पहाड़ियों में ढोक पठान में प्रस्तुत किया गया था।
- रिचर्ड लिडेकर ने शुतुरमुर्ग के इस विलुप्त प्रजाति की पहचान स्ट्रूथियों एशियाटिकस या एशियाई शुतुरमुर्ग के रूप में की थी।
- शुतुरमुर्ग की इस विलुप्त प्रजाति का नाम रिचर्ड मिल्ने एडवर्डस ने 1871 ईस्वी में रखा था।

महाराष्ट्र (1989) -

- वर्ष 1989 में पुरातत्वविद एस ए साली ने महाराष्ट्र के पटने में एक पुरापाषाणकालीन स्थल में लगभग 50 हजार वर्ष पुरानी शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलके एवं उसके छोटे-छोटे टुकड़े की खोज की पुष्टि की थी।

शुतुरमुर्ग संबंधी अन्य शोध (भारतीय उपमहाद्वीप) –

- वर्ष 2017 में हैदराबाद स्थित सेंटर फॉर सेल्यूलर एंड मॉलेक्युलर बायोलॉजी (CCMB) के शोधकर्ताओं ने राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र में मिले शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलके का उम्र का आकलन करके बताया कि भारत में लगभग 25 हजार वर्ष पहले शुतुरमुर्ग की उपस्थिति थी।
- वर्ष 2020 में येल विश्वविद्यालय और स्मिथसोनियन नेशनल म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री के शोधकर्ताओं ने भारत के करीब 25 साइटों से जीवाश्मों के डेटाबेस संकलित करके एक अध्ययन प्रकाशित करके कहा कि भारत में मेगाफौना जानवरों की विलुप्ति लगभग 30 हजार वर्ष पहले मनुष्यों के आगमन के साथ ही शुरू हुई थी।

मेगाफौन की विलुप्ति और कारण –

- पुरातत्वविदों के अनुसार अंतिम हिमयुग के उत्तरार्ध के दौरान ही 1000 Kg से अधिक द्रव्यमान वाले 80% मेगाफौना की विलुप्ति अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा उत्तरी यूरेशिया से हो गई थी।
- हालांकि छोटे मेगाफौना की विलुप्ति लगभग 30 हजार वर्ष पहले हुई।
- मेगाफौना की विलुप्ति के लिए संभावित जिम्मेदार कारक -
- जलवायु परिवर्तन
- बीमारी
- मानव शिकार
- अन्य जानवरों से प्रतिस्पर्धा
- जंगलों में आग, भूकंप, बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा

शुतुरमुर्ग –

- शुतुरमुर्ग जिसका वैज्ञानिक नाम 'स्ट्रूथियो कैमेलस' है एक उड़ान रहित पंछी की एक प्रजाति है।
- वर्तमान में शुतुरमुर्ग की दो प्रजातियां मौजूद हैं।
- सामान्य शुतुरमुर्ग 'स्ट्रूथियोनिफामेंस' से संबंधित है जिन्हें पंक्षियों की श्रेणी 'रेटाइटस' में रखा गया है।
- पक्षियों की श्रेणी 'रिटाइटस' में किवि, एमस, टिनैमस, रियास और कैसोवरी जैसे पंछियों को रखा गया है।

ResultMitra

- शुतुरमुर्ग की दूसरी श्रेणी 'सोमाली शुतुरमुर्ग' जिसे पहले शुतुरमुर्ग की एक विशिष्ट उप प्रजाति माना जाता था को वर्ष 2014 में बर्डलाइफ इंटरनेशनल द्वारा एक अलग प्रजाति के रूप में मान्यता दे दी गई।

शुतुरमुर्ग की उप प्रजातियां एवं निवास –

- वर्तमान में जीवित शुतुरमुर्ग को चार उप प्रजाति में विभाजित किया गया है:-

- **उत्तरी अफ्रीकी शुतुरमुर्ग -** उत्तरी अफ्रीकी शुतुरमुर्ग को लाल गर्दन वाला शुतुरमुर्ग या बार्बरी शुतुरमुर्ग भी कहा जाता है।
  - **लंबाई -** 9 फीट
  - **वजन -** 154 Kg
  - नर शुतुरमुर्ग का पंख काला और सफेद तथा मादा का पंख भूरा
  - होता है।
  - उत्तरी अफ्रीकी शुतुरमुर्ग मुख्य रूप से उत्तरी अफ्रीका के अल्जीरिया, मध्य अफ्रीकी गणराज्य, सूडान, ट्यूनीशिया, पश्चिमी अफ्रीका के घाना, नाइजीरिया और सेनेगल में निवास करती है।
  - उत्तरी अफ्रीकी शुतुरमुर्ग अफ्रीका के मात्र 18 देशों में बचा हुआ है।

- **दक्षिण अफ्रीकी शुतुरमुर्ग -** दक्षिणी अफ्रीकी शुतुरमुर्ग को काली गर्दन वाला शुतुरमुर्ग या केप शुतुरमुर्ग कहा जाता है। इस प्रकार के शुतुरमुर्ग दक्षिण अफ्रीका के अंगोला, कांगो, जाम्बिया और जिम्बाब्वे में पाया जाता है।

- **मसाई शुतुरमुर्ग -** मसाई शुतुरमुर्ग को गुलाबी गर्दन वाला या पूर्वी अफ्रीकी शुतुरमुर्ग भी कहा जाता है। शुतुरमुर्ग की यह प्रजाति मुख्य रूप से दक्षिणी केन्या, पूर्वी तंजानिया, इथियोपिया और सोमालिया के कुछ हिस्सों में पाया जाता है।

- **अरब शुतुरमुर्ग -** अरब शुतुरमुर्ग जिसे सिरीयाई शुतुरमुर्ग भी कहा जाता है जो अरब प्रायद्वीप के सीरिया ईराक में आम था 1966 के आसपास विलुप्त हो गया। वर्तमान में अरब शुतुरमुर्ग की कुछ प्रजाति पश्चिमी एशिया के ईरान, जॉर्डन, कुवैत और यमन जैसे देशों में बड़ी मात्रा कम संख्या में निवास करती हैं।

संरक्षण -

- पिछले 200 वर्षों में शुतुरमुर्ग की आबादी में लगातार कमी होती गई है जिसके कारण आईयूसीएन (International Union for Conservation of Nature) और वर्डलाइफ इंटरनेशनल ने इसे 'चिंता की प्रजाति' (लुप्तप्राय प्रजाति) के रूप में वर्गीकृत किया है।

IUCN -

- प्रकृति संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ (IUCN) एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है जो प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के क्षेत्र में काम करती है।
- **स्थापना -** 1948
- **मुख्यालय -** ग्लैंड (स्वीटजरलैंड)

- IUCN को रेड लिस्ट ऑफ थ्रेटर्ड स्पीशीज को संकलित एवं प्रकाशित करने का काम करती है।

वर्डलाइफ इंटरनेशनल -

- वर्ल्डलाइफ इंटरनेशनल एक गैर सरकारी संगठन है जो वैश्विक स्तर पर पंक्षियों और उनके आवासों के संरक्षण के लिए काम करती है।
- **स्थापना -** 20 जून 1922

Result Mitra

- **मुख्यालय -** कैम्ब्रिज (UK)
- वर्ल्डलाइफ इंटरनेशनल के अंतर्गत लगभग 116 देशों के साझेदार संगठनों से लगभग 2.5 मिलियन लोग कार्यरत हैं।
- वाइल्डलाइफ इंटरनेशनल द्वारा अब तक 13 हजार से अधिक महत्वपूर्ण पंक्षी और जैव विविधता क्षेत्र की पहचान वैश्विक स्तर पर की गई है।

Result Mitra